1. पहले पद में मीरा ने हरि से अपनी पीड़ा हरने की विनती किस प्रकार की है?

उत्तर:

मीरा हरि से उनकी पूर्व लीलाएँ स्मरण कराते हुए कहती हैं—जैसे आपने द्रौपदी की लाज बचाई, प्रह्लाद के लिए नरसिंह अवतार लिया, गजराज को मगरमच्छ से छुड़ाया; वैसे ही मेरी पीड़ा भी हर लें।

2. दूसरे पद में मीराबाई श्याम की चाकरी क्यों करना चाहती हैं?

उत्तर:

वे दासी बनकर श्रीकृष्ण के पास रहना, बाग लगाना, उनका स्मरण और दर्शन करना तथा उनकी लीलाओं का गायन कर भक्ति-रस में डूबना चाहती हैं।

3. मीराबाई ने श्रीकृष्ण के रुप-सौंदर्य का वर्णन कैसे किया है?

उत्तर:

मोरपंख मुकुट, वैजंती माला, पीतांबर-धारण, वंशीधर, वृंदावन में यमुना के तट पर गाय चराते समय उनका स्वरूप मनोहारी लगता है।

MATRIX STUDIES

4. मीराबाई की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर:

भाषा में ब्रज, राजस्थानी, गुजराती का मिश्रण है; लयात्मक, गीतिपूर्ण और लोकभाषा के समीप; सरल अनूठे देशज शब्द, अनुप्रास-रूपक अलंकार।

5. वे श्रीकृष्ण को पाने के लिए क्या-क्या करने को तैयार हैं?

उत्तर:

- दासी बनकर सेवा
- बाग लगाना
- द्वार-गली में कीर्तन
- कुसुम्बी साड़ी पहनकर आधी रात में दर्शन

काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए

1. हरि आप हरो जन री भीर...

उत्तर:

मीरा श्रीकृष्ण से कहती हैं—जैसे आपने द्रौपदी, प्रह्लाद की रक्षा की; वैसे मेरी भी पीड़ा दूर करें। यहाँ हरि की करुणा–माधुर्यता, श्लेष व लयात्मकता का सुंदर समावेश है।

2. बूढ़तो गजराज राख्यो, काटी कुण्जर पीर...

उत्तर:

जैसे आपने डूबते गजराज की रक्षा की, वैसे मेरी पीर भी हर लें। लय, अनुप्रास, तुकांतिकता और दृष्टांत–अलंकार का श्रेष्ठ उदाहरण।

3. चाकरी में दरसण पास्यूँ...

उत्तर:

चाकरी से दर्शन, स्मरण, भाव-भक्ति तीनों सुख एक साथ मिलते हैं। अनुप्रास और गेय शैली, दास्यभाव की प्रभावी अभिव्यक्ति।

भाषा-अध्ययन (प्रचलित रूप)

पाठ्य शब्द प्रचलित रूप

भीर	पीड़ा/कष्ट/दुख
री	की
चीर	वस्त्र
बूढ़ता	डूबना
धर्यो	धारण
लगास्यूँ	लगाऊँ
कुण्जर	हाथी
घणा	बहुत
बिन्दरावन	वृंदावन

पाठ्य शब्द प्रचलित रूप

सरसी	उत्कृष्ट/अच्छी
रहस्यूँ	रहूँगी
हिवड़ा	हृदय
राखो	रखो/रखना
कुसुम्बी	केस (especially, केसरिया रंग)